



श्रीमद्भगवद्गीता का शिक्षाशास्त्र और इंटरफेस

कृष्ण कुमार ^{1*}, डॉ. सावित्री गहोई ²

1. शोधार्थी, श्री कृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत
ouriginal.sku@gmail.com ,
2. प्रोफेसर, श्री कृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश: प्राचीन काल के दौरान, प्रत्येक भारतीय अनुशासन की संस्कृत ग्रंथों की व्याख्या की अपनी अलग शैली थी और इन ग्रंथों को पढ़ाने के लिए विभिन्न विधियों, आलोचनात्मक और साथ ही वैज्ञानिक, को नियोजित किया। पश्चिमी तरीकों के आगमन और प्रभुत्व के साथ समय के दौरान इन भारतीय तरीकों को भुला दिया गया। हालाँकि बाद की विधियों को संस्कृत पढ़ाने के लिए अपर्याप्त पाया गया। हम पहले शिक्षण की दो प्राचीन भारतीय विधियों का संक्षेप में वर्णन करेंगे, दोनों विधियों की तुलना करेंगे और उनके महत्व पर प्रकाश डालेंगे। केवल उन पश्चिमी विधियों की जाँच करेंगे जो संस्कृत पढ़ाने के लिए लागू की गई थीं और इसके बाद इस शिक्षण में हाल की प्रवृत्तियाँ थीं। भगवद गीता के लिए एक इंटरैक्टिव इंटरफ़ेस प्रस्तुत करते हैं और उदाहरण के साथ इस इंटरफ़ेस की विभिन्न विशेषताओं का विस्तार से वर्णन करते हैं और फिर चर्चा करते हैं कि संस्कृत पढ़ाने की दो प्राचीन विधियों के पुनरुद्धार में भाषा तकनीक कैसे उपयोगी हो जाती है।

मुख्य शब्द: श्रीमद्भगवद्गीता, शिक्षाशास्त्र, इंटरफेस, संस्कृत, शिक्षण

----- X -----

परिचय

मूल संस्कृत कार्यों के अध्ययन से हमें शिक्षण के तरीकों पर प्रकाश डालने वाले विचारों का पता चलता है। दो पारंपरिक तरीके अर्थात्। दंडवय और खंडनवय को संस्कृत के प्रभावी शिक्षण के लिए नियोजित किया गया था।

भारतीय विधियों की उपयोगिता

आम तौर पर, आधुनिक स्कूलों में प्रशिक्षित छात्र संस्कृत ग्रंथों का विश्लेषण करने में असमर्थ थे और समझने के लिए मूल कार्यों के बजाय अनुवाद का सहारा लेते थे, जो अक्सर असंतोषजनक होता है। इसके विपरीत पारंपरिक तरीकों में प्रशिक्षित छात्र ग्रंथों में शब्दों के अर्थ के सूक्ष्म रंगों को समझने में अधिक सक्षम थे। उपर्युक्त दोनों भारतीय पारंपरिक तरीकों में, मौखिक अनुभूति (शब्दबोध) के सिद्धांतों के साथ-साथ संधि, समास और कारक के लिए व्याकरण के नियमों के न्यूनतम सेट का पूर्व ज्ञान होना आवश्यक है। आवश्यक कारक जो शब्दबोध में मदद करते हैं जैसे पारस्परिक प्रत्याशा (आकांक्षा), अनुरूपता (योग्यता), निकटता (सनिधि) और तात्पर्य (तात्पर्य) भी मौखिक अनुभूति की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (ऐनी ओकीफे, 2007)।

खांडवय विधि एक छात्र को क्रियात्मक उदाहरणों के माध्यम से मौखिक अनुभूति की प्रक्रिया को समझने में मदद करती है। आकांक्षा की अवधारणा एक छात्र को सिखाती है कि एक वाक्य में शब्दों के बीच संबंध स्थापित करने के लिए सुराग कहाँ देखना है, योगिता सिखाती है कि अभिधा, लक्षण और व्यंजना के बीच कौन सा अर्थ देखना है, जबकि सन्निधि बीच संबंधों के संभावित संयोजनों पर कुछ बाधाएँ डालता है। शब्द, और तात्पर्य अस्पष्ट शब्दों की व्याख्या करने और उच्चारण के पूरे अर्थ को समझने में मदद करता है (बायेन, 2008)।

नए पश्चिमी तरीके

जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, जब व्याकरण-अनुवाद पद्धति अप्रभावी पाई गई, तो आधुनिक विधियों को पेश किया गया। उदाहरण के लिए 'मौखिक दृष्टिकोण और स्थितिजन्य भाषा शिक्षण, निर्देशित अभ्यास' जैसे विभिन्न कार्यात्मक तरीके आजमाए गए। इंटरैक्टिव विधियों में, 'डायरेक्ट मेथड, सीरीज़ मेथड, कम्युनिकेटिव लैंग्वेज टीचिंग, लैंग्वेज इमर्सन, साइलेंट वे, कम्युनिटी लैंग्वेज लर्निंग, सजेस्टो-पीडिया, नेचुरल अप्रोच, टोटल फिजिकल रेस्पॉन्स, टीचिंग प्रोफिशिएंसी थ्रू रीडिंग एंड स्टोरीटेलिंग, डोगमे भाषा शिक्षण', आदि पेश किए गए। इनके अलावा, मुख्यधारा के शिक्षण में उपयोग नहीं किए जाने वाले दृष्टिकोण हैं (भारती,

2010)। 'पिमस्लेर विधि, मिशेल थॉमस विधि, ऐप्रोपेडियम, कंप्यूटर असिस्टेड लैंग्वेज लर्निंग, शिक्षण द्वारा सीखना, आदि। संस्कृत शिक्षण के वर्तमान परिदृश्य में, कुछ इन पश्चिमी विधियों को अपनाया गया है, अर्थात् मौखिक विधि और प्रत्यक्ष विधि।

संस्कृत शिक्षण में वर्तमान रुझान

कई सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों ने संस्कृत भाषा को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए प्राचीन भारतीय तरीकों और पश्चिमी तरीकों ज्यादातर मौखिक पद्धति और प्रत्यक्ष पद्धति दोनों को मिलाया है। ये संस्थान दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से मुद्रित रूप में पाठ प्रदान करते हैं। कुछ संस्थान विभिन्न शंकाओं के स्पष्टीकरण के लिए संपर्क-कक्षाएं या एक प्रशिक्षक प्रदान कर सकते हैं जहां निर्देश का तरीका आम तौर पर स्रोत भाषा है। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जैसे संस्थान पत्राचार पाठ्यक्रम संचालित करते हैं और एक प्रशिक्षक प्रदान करते हैं जो लक्षित भाषा में कक्षाएं संचालित करता है। दोनों संस्थानों की अध्ययन-पुस्तकों में थोड़े बदलाव के साथ शिक्षण की समान पद्धति है: -

- श्रीमद्भगवद्गीता-संग्रह
- श्रीमद्भगवद्गीता-संग्रह
- गीताप्रवेश
- भाषा प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग

आज की पीढ़ी अधिक तकनीक की समझ रखने वाली है और सामाजिककरण, काम करने के साथ-साथ सीखने के लिए अक्सर इंटरनेट/वेब का उपयोग करती है। हाल के वर्षों में संस्कृत के लिए कई कम्प्यूटेशनल टूल्स का तेजी से विकास हुआ है। क्या संस्कृत सीखने के बोझ को कम करने के लिए इन कम्प्यूटेशनल प्लेटफार्मों का उपयोग करना संभव है? भारती एट अल। (2000) चर्चा करता है कि अनुसारक, एक भाषा एक्सेसर, मनुष्य और मशीन के बीच भाषा सीखने के भार को साझा करके भाषा की बाधा को दूर करने में कैसे मदद करता है। जो कार्य मनुष्य के लिए कठिन होते हैं उन्हें मशीन द्वारा नियंत्रित किया जाता है और जो कार्य एक मशीन के लिए कठिन होते हैं उनका भार मनुष्य अपने ऊपर ले लेता है। मैन-मशीन 'इक्लेक्टिक मिक्स' यानी मानव के विश्व ज्ञान और कम्प्यूटेशनल टूल्स का संयोजन वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की पीढ़ी पर सकारात्मक प्रभाव पैदा करेगा (कॉल्सन, 2003)।

प्राचीन भारतीय विधियां

संस्कृत के मूल कार्यों के अध्ययन से हमें शिक्षण के तरीकों पर विचारों को रोशन करने का पता चलता है। दो पारंपरिक तरीके अर्थात् संस्कृत के प्रभावी शिक्षण के लिए दशनवायः और खानवायः की गई।

दशनवायः विधि

इस विधि में, सभी शब्दों को एक कविता की आसान समझ के लिए उनके व्याकरण के कार्य और वाक्यात्मक संबंध के अनुसार गद्य क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। डिफॉल्ट शब्द आदेश (अन्वयः) या 'विहित रूप' लगभग निम्नलिखित कविता द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

अनवैया के माध्यम से एक छात्र वांछित (अभिता) अर्थ निर्धारित करने में सक्षम हो सकता है।

खानवायः विधि

यह पहले प्रमुख वाक्य को चुनने में दशनवायः विधि जैसा दिखता है, लेकिन व्यक्तिगत शब्दों या वाक्यांशों पर प्रश्न तैयार करके अनुभागों (खसासी) में किए जाने वाले पूरे वाक्य के शेष शब्दों के अर्थ के बारे में इससे अलग है (सिंथिया लासोडे, 2008)। दूसरे शब्दों में, एक वाक्य का मूल कंकाल दिया जाता है और अन्य विवरण प्रश्न पूछकर भरे जाते हैं। इस प्रकार इसे संस्कृत प्रश्न शब्दों जैसे कथाभबुता, किम, कडा, किराथम आदि के प्रयोग के कारण कथाभूति भी कहा जाता है। ये प्रश्न उनके विभिन्न संशोधकों की मांग करने वाले प्रमुखों के चारों ओर केंद्रित हैं। यह दृष्टिकोण विभिन्न निर्भरता (करका) संबंधों को दिखाने वाले वाक्य को पार्स

करने के करीब है।

दोनों विधियों की तुलना

दोनों विधियाँ विश्लेषणात्मक-संश्लेषी प्रक्रियाएँ हैं जिनमें एक वाक्य की कई विश्लेषित इकाइयाँ शब्दों के अंतर-संबंधों की समझ के माध्यम से परस्पर प्रत्याशा (अकाँक्षा), अनुरूपता (योग्याता) और निकटता (सनिधि) के सिद्धांतों के माध्यम से संयुक्त होती हैं। अंत में, छात्रों को एक पूरे के रूप में एक वाक्य या मार्ग के एकीकृत और व्यापक अर्थ या तात्पर्य (तपर्य) की ओर ले जाया जाता है। दंडान्वय पद्धति व्याकरणिक कार्य पर आधारित प्रश्नों पर केंद्रित है जो त्वरित समझ के लिए सहायक है, लेकिन इस प्रक्रिया में, काव्य आकर्षण / सौंदर्य सौंदर्य खो जाता है; जबकि खंडनवय पद्धति में प्रश्न मुख्य रूप से विषय-वस्तु पर आधारित होते हैं। पूर्व में, विषय को आम तौर पर पहले उठाया जाता है, उसके बाद क्रियाओं के अन्य तर्क और अंत में क्रिया; जबकि बाद में, क्रिया को पहले उसके तर्कों के बाद उठाया जाता है (देव, 2008)।

पश्चिमी तरीकों का प्रभाव

भारत में ब्रिटिश शासन की शुरुआत के साथ ही धीरे-धीरे शिक्षण और सीखने के पश्चिमी तरीकों को स्कूलों में न केवल आधुनिक विज्ञान सिखाने के लिए बल्कि आधुनिक भाषाओं और यहां तक कि संस्कृत जैसी शास्त्रीय भाषा सिखाने के लिए भी शुरू किया गया। व्याकरण अनुवाद विधि जो लैटिन और ग्रीक जैसी शास्त्रीय भाषाओं को पढ़ाने के लिए यूरोप में लोकप्रिय थी, को कई लोगों द्वारा संस्कृत पढ़ाने के लिए अपनाया गया था।

पश्चिमवासियों ने संस्कृत भाषा सीखने और समझने के लिए यह तरीका अपनाया और भारतीयों ने अब तक इस प्रवृत्ति का पालन किया। संस्कृत की पहली और दूसरी पुस्तक आर जी भंडारकर की संस्कृत, के पी त्रिवेदी की संस्कृत शिक्षक दो खंडों में, एम. देशपांडे की संस्कृतसुबोधिन, थॉमस एजेन का संस्कृत से परिचय दो भागों में, माइकल कूलसन की सिखाई संस्कृत, रॉबर्ट और सैली गोल्डमैन की देववाशप्रवेशिका: आदि से शुरू हुई इस पद्धति पर आधारित कई संस्कृत शिक्षण पुस्तकें लिखी गईं। छात्रों को लक्षित भाषा शब्दावली शब्दों के अनुवाद समकक्ष के साथ-साथ अवनति और संयुग्मन की एक लंबी सूची याद करना है। इस विधि में, प्रमुख जोर व्याकरण और शब्दावली पर है, लेकिन बोलने और सुनने पर बहुत कम ध्यान मिला। यह माना जाता है कि छात्र स्रोत भाषा पाठ को समझना सीखते हैं और इसे लक्षित भाषा में व्यक्त करते हैं (देशपांडे, 2007)।

जब व्याकरण-अनुवाद विधि अप्रभावी पाई गई, तो आधुनिक तरीके पेश किए गए। उदाहरण के लिए विभिन्न कार्यात्मक तरीकों जैसे 'मौखिक दृष्टिकोण और परिस्थितिजन्य भाषा शिक्षण, निर्देशित अभ्यास' की कोशिश की गई। इंटरएक्टिव तरीकों में, 'प्रत्यक्ष विधि, श्रृंखला विधि, संचार भाषा शिक्षण, भाषा विसर्जन, मूक तरीका, सामुदायिक भाषा सीखने, सुझाए, प्राकृतिक दृष्टिकोण, कुल शारीरिक प्रतिक्रिया, पढ़ने और कहानी के माध्यम से प्रवीणता शिक्षण, डॉगमे भाषा शिक्षण', आदि शुरू किए गए थे। इनके अलावा, मुख्यधारा के शिक्षण में उपयोग नहीं किए जाने वाले दृष्टिकोण हैं जैसे, 'पिम्सलेर विधि, मिशेलथॉम्स विधि, एप्रोपीडिम, कंप्यूटर असिस्टेड लैंग्वेज लर्निंग (कॉल), शिक्षण द्वारा सीखना आदि। संस्कृत शिक्षण के वर्तमान परिदृश्य में, इनमें से कुछ पश्चिमी विधियां अपनाई गई हैं, नाम मौखिक विधि और प्रत्यक्ष विधि (ईश्वरन, 2007)।

मौखिक विधि: इस विधि में, लिखित मामले को सौंपने से पहले मौखिक रूप से लक्षित भाषा सिखाई जाती है। व्याकरण को धीरे-धीरे सबसे बुनियादी रूपों के साथ पेश किया जाता है जो पहले और बाद में जटिल लोगों को सिखाया जाता है। शब्दावली प्रशिक्षण पर जोर दिया जाता है जो वाक्य पैटर्न के साथ व्याकरण संरचनाओं के मानचित्रण के माध्यम से व्याकरण कौशल के बाद पढ़ने के कौशल को सहायता देता है। यह शिक्षार्थियों को नियमों और वाक्य संरचनाओं को आंतरिक बनाने में सहायता करता है।

प्रत्यक्ष विधि: इस विधि में, लक्ष्य भाषा शब्दावली प्रदर्शन और दृश्य एड्स की मदद से सिखाया जाता है। मौखिक संचार कौशल प्रश्न और उत्तर सत्रों पर बनाया जाता है। छात्र उदाहरणों से व्याकरण के नियम सीखते हैं और उनका अभ्यास करते हैं। यहां बोलने और सुनने पर पढ़ने और लिखने पर ज्यादा जोर दिया जाता है।

भाषा प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग

आज पीढ़ी और अधिक प्रौद्योगिकी प्रेमी है और अक्सर मेलजोल के लिए इंटरनेट/वेब का उपयोग करें, काम करने के साथ ही सीखने। हाल के वर्षों में संस्कृत के लिए कई कम्प्यूटेशनल टूल्स की तेजी से उन्नति हुई है। क्या संस्कृत सीखने के बोझ को कम करने के लिए इन कम्प्यूटेशनल प्लेटफार्मों का उपयोग करना संभव है। एक भाषा अभिगमकर्ता, मनुष्य और मशीन के बीच भाषा सीखने के भार को साझा करके भाषा बाधा पर काबू पाने में मदद करता है। जो कार्य मनुष्य के लिए कठिन होते हैं, उन्हें मशीन द्वारा संभाला जाता है और मनुष्य उन कार्यों का भार लेता है जो एक मशीन के लिए कठिन होते हैं। मानव मशीन 'उदार मिश्रण' यानी मानव के विश्व ज्ञान और कम्प्यूटेशनल उपकरणों का संयोजन वर्तमान के साथ-साथ भावी पीढ़ी पर सकारात्मक प्रभाव पैदा करेगा। ये दोनों परिदृश्य डोमेन विशिष्ट शिक्षण/लर्निंग कैप्सूल की मांग करते हैं (एजेन्स, 2000)।

ई-रीडर

डोमेन विशिष्ट शिक्षण/लर्निंग कैप्सूल की आवश्यकता पहले के दिनों में भी महसूस की गई थी। हम विभिन्न लोकप्रिय और महत्वपूर्ण कार्यों पर टिप्पणियों की अधिकता में आते हैं। ये टिप्पणियां, या तो दंडनवायः या खानवायः विधि का पालन करें और चयनित पाठ की प्रत्येक कविता को समानार्थियों, व्युत्पत्ति विवरण, दार्शनिक विवरण, असाधारण व्याकरण नियमों, आदि के साथ खंडित पाठ प्रदान करने के लिए कई बार दोनों तरीकों के संयोजन की व्याख्या। उपलब्ध कम्प्यूटेशनल प्लेटफार्मों के साथ अब कमेंट्री परंपरा की इन सभी संभावित बारीकियों के साथ किसी भी संस्कृत पाठ का अर्ध-स्वचालित रूप से विश्लेषण करना और एक ही विश्लेषण को अधिक कॉम्पैक्ट और उपयोगकर्ता के अनुकूल तरीके से प्रस्तुत करना संभव है।

- ई-रीडर बेहतर समझ के लिए एनवैया के साथ-साथ मूल पाठ तक पहुंच प्रदान करता है।
- पाठ में प्रत्येक शब्द का रूपात्मक विश्लेषण प्रदान किया जाता है।
- विजुअलाइज़ेशन मजबूत सहयोग बनाने में मदद करता है। कराका और समसा जैसी जटिल अवधारणाओं का चित्रमय प्रतिनिधित्व एक पाठक के लिए कार्य को आसान बनाता है।
- थेसॉरस और द्विभाषी शब्दकोशों के साथ लिंक उन लोगों के लिए एक अतिरिक्त लाभ है जो पाठ में एक शब्द का विस्तृत ज्ञान चाहते हैं।
- बेहतर स्पष्टता के लिए एक पाठक हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी शब्द ग्लॉस का सहारा ले सकता है।
- अतिरिक्त जानकारी जैसे एटिमोलॉजिकल जानकारी, आदि जानकारी प्रदान की जाती है।

श्रीमद् भागवत गीता इंटरफ़ेस विवरण

भगवद गीता इंटरफ़ेस का मुख्य पृष्ठ जो एक ग्राफिक यूजर इंटरफ़ेस है, ई-पेज का मुख्य शीर्षक देता है जो 'भगवदगी' और उप-शीर्षक 'गीत सुगीता कार्विया किमन्याई शास्त्रविस्तारः' (एक बार गीता का ठीक से अध्ययन किया गया है, अन्य शास्त्र विस्तृत कम हो जाते हैं)। फीचर की जानकारी डिस्प्ले-स्क्रीन के बाएं हाथ पर दी गई है जबकि दाएं हाथ पर टैबुलर फॉर्म में प्रत्येक चैप्टर नंबर का डिस्प्ले है (गोयंदका, 2016)। अध्याय संख्या का संकेत देने वाले आइकन पर चयन और क्लिक करने से उस अध्याय की विशेषताओं के साथ एक नया ई-पेज खुलेगा। अगले उपधारा में, हम इंटरफ़ेस की विशेषताओं पर चर्चा करते हैं।

इंटरफ़ेस की उपयोगिता

यह वर्क और इंटरफ़ेस स्टूडेंट के साथ-साथ टीचर दोनों के लिए फायदेमंद हो सकता है।

एक छात्र के लिए उपयोगिता: इंटरफ़ेस निम्नलिखित तरीकों से छात्र सीखने के लिए सीधे योगदान देता है:

- एक छात्र को मूल संस्कृत पाठ के पहले हाथ ज्ञान तक पहुंच हो सकती है।
- उपकरणों और प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग से, वह किसी दिए गए पाठ को समझने और भाषा की खोज में सक्रिय रूप से संलग्न होने के लिए बेहतर तरीके से प्रेरित किया जा सकता है। एक क्लिक पर विभिन्न भाषा संसाधनों के साथ, एक छात्र को

विभिन्न दृष्टिकोणों से किसी दिए गए कार्य की जांच करने का अवसर मिलता है जिससे उनकी रचनात्मकता कौशल में होता है।

- एक छात्र को अपनी व्यक्तिगत जरूरतों और वरीयताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न उपकरणों तक आसान पहुंच हो सकती है जिससे सीखने के कमजोर क्षेत्रों में सुधार हो सकता है।
- व्यक्तिगत सीखने की जगह का अवसर होने से उसे बहुत लाभ होता है। इस तरह वह धीरे-धीरे सुधार कर सकता है और अपने व्यक्तिगत गति से कौशल सीखने वाले लोगों को निखार सकता है।
- निरंतर अभ्यास, विकास और शोधन के माध्यम से, एक छात्र किसी पाठ में किसी भी नई जानकारी को समझने, सीखने और बनाए रखने में आत्मविश्वास प्राप्त कर सकता है।

एक शिक्षक के लिए उपयोगिता: शिक्षण प्रथाओं के साथ प्रौद्योगिकी सम्मिश्रण शिक्षकों के लिए एक चुनौती हो सकती है। लोगों के व्यवहार में इंटरफ़ेस की क्षमता को पहचानने से, एक शिक्षक शैक्षिक उपकरणों और प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में विश्वास हासिल कर सकता है (कुलकर्णी, 2013)।

- शिक्षक एक बार इंटरफ़ेस की मदद से एक पाठ को समझने और यह निर्धारित करने के लिए सक्रिय छात्र भागीदारी सुनिश्चित कर सकता है कि भाषाई अभिव्यक्तियों पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए। इस तरह एक शिक्षक शिक्षण पद्धति के साथ प्रौद्योगिकी के संयोजन से सीखने में छात्रों को शामिल कर सकते हैं।
- एक शिक्षक छात्रों के स्वयं अध्ययन के लिए अच्छा आवेदन अभ्यास और कार्य ईजाद कर सकता है। यह उनके व्यक्तिगत प्रतिबिंब और सहयोग का समर्थन विकास में एक योगदान कारक हो सकता है।
- एक बार जब विषय स्पष्ट रूप से छात्रों द्वारा समझ में आता है, तो शिक्षक सामग्री के कई दृष्टिकोण और अभ्यावेदन प्रदान कर सकता है।
- लंबी और थकाऊ शब्द-संरचनाओं को पढ़ाने के लिए समय और ऊर्जा का प्रभावी प्रबंधन आवश्यक है। यह उपकरणों का उपयोग करने में छात्रों को उलझाने से काफी कम किया जा सकता है।

निष्कर्ष

भगवद गीता इंटरफ़ेस पर विस्तृत और सचित्र चर्चा के बाद उनकी उपयोगिताओं और कमियों के साथ भारतीय और साथ ही पश्चिमी शिक्षण पद्धतियों पर चर्चा की है। इस चरण दो के समापन भाग में हमने छात्र और प्रशिक्षक दोनों की उपयोगिता पर चर्चा की। अगले खंड में हमने भगवद गीता सीखने के लिए केवल उन पाणिनीय सूत्रों को ध्यान में रखते हुए एक शिक्षण मॉड्यूल तैयार किया है जो सांख्यिकीय परिणामों की सहायता से पाठ को समझने के लिए आवश्यक हैं।

संदर्भ

1. ऐनी ओकीफे, माइकल मैककार्थी और कार्टर, रोनाल्ड, फ्रॉम कॉर्पस टू क्लासरूम। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क (2007)।
2. बायेन, आर. हैराल्ड, भाषाई डेटा का विश्लेषण: सांख्यिकी में एक व्यावहारिक परिचय। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क (2008)।
3. बेसेंट, एनी और दास, भगवान, भगवद गीता। थियोसोफिकल पब्लिशिंग सोसाइटी, लंदन (1905)।
4. भारती, अक्षर और कुलकर्णी, अंबा, इंफॉर्मेशन कोडिंग इन ए लैंग्वेज: सम इन-साइट्स फ्रॉम पैनिनियन ग्रामर। राणा, डीआईएलआईपी (संपा.), धीमही, जर्नल ऑफ चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन शोध संस्थान (2010)।
5. भारती, अक्षर; कुलकर्णी, अम्बा पी; चैतन्य, विनीत; संगल, राजीव और राव, जी उमामहेश्वरा, अनुसारका: भारत में भाषा अवरोध पर काबू पाना। अनुवाद में, सेज पब्लिशर्स, नई दिल्ली (2000)।
6. कॉल्सन, माइकल, टीच योरसेल्फ संस्कृत। द मैकग्रा-हिल कंपनीज, इंक., यूएस (2003)।

7. सिंथिया लासोंडे, जेरुसलम रिवर-विल्सन, रॉबर्ट माइकल (संपा.), शिक्षक शिक्षा में वर्तमान मुद्दे। चार्ल्स सी थॉमस पब। लिमिटेड, यूएसए (2008)।
8. देव, अश्विनी एस., शास्त्रीय संस्कृत पद्य का मीट्रिक संगठन। जर्नल ऑफ लिंग्विस्टिक्स (2007) में।
9. देशपांडे, एम.एम., संस्कृतसुबोधिनी: एक संस्कृत प्राइमर। सेंटर फॉर साउथ एंड साउथईस्ट एशियन स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन (2007)।
10. ईश्वरन, एकनाथ, भगवद गीता। नीलगिरी प्रेस, कैलिफोर्निया (2007)।
11. एजेन्स, थॉमस, संस्कृत का परिचय (भाग II)। मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा. लिमिटेड, दिल्ली (2000)।
12. गांधी, एम. के., गीतापादार्थकोष। सांस्कृतिक गौरव संस्थान, नई दिल्ली (2010)। गांगुली, केसरी मोहन, कृष्ण-द्वैपायन व्यास की महाभारत। मुंशी-राम मनोहरलाल, नई दिल्ली (1993)।
13. गोयंदका, जयदयाल (संपा.), श्रीमद भगवद गीता (पदच्छेदा-अनवय)। गीता प्रेस, गोरखपुर, उ.प्र. (2016)।
14. गुप्ता, अनिल, एक स्वचालित संस्कृत यौगिक प्रसंस्करण। पीएच.डी. थीसिस, मानविकी स्कूल, हैदराबाद विश्वविद्यालय (2010)।
15. कुलकर्णी, अम्बा और रामकृष्णमाचार्युलु, के. वी., पार्सिंग संस्कृत टेक्स्ट्स: सम रिलेशन स्पेसिफिक इश्यूज। पांचवें संस्कृत कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान संगोष्ठी की कार्यवाही में, डी के प्रकाशक (2013)।
16. कुलकर्णी, तिरुमाला, सरला कथिना संस्कृतम। श्रीभागवतश्रमप्रतिष्ठानम्, श्रीमत्सत्पतिथसंस्थानम्, श्रीभंडाराकेरीमठः, बेंगलुरु (2015)।